डा. मुरली मनोहर जोशी : यह तो मैंने बता दिया ....(**व्यवधान**)....

श्री मोहम्मद सलीम : फेलोशिप की एप्लीकेशंस को प्रोसैस करने के लिए ....(**व्यवधान**)....

†**شری محمد سلیم:** فیلوشپ کی اپلیکیشن کو پروسیس کرنے کے لئے..."مداخلت"...

डा. मुरली मनोहर जोशी : मैं यह कह सकता हूं कि इसमें आवश्यक विलम्ब नहीं हैं क्योंकि 600 या 700 वैज्ञानिकों में से स्क्रीन करना और फिर उनके साथ इंटरव्यू दो-दो बार करना, यह एक अपने आप में बहुत सावधानी की जरूरत पड़ती है और मैं ऐसा समझता हूं कि खोज-बीन करके ठीक परंपरा बनाना जरूरी है। यह पहला चांस हैं इसलिए इसके बारे में विधिवत् स्टैडड्र्ज को नार्मलाइज़ करने की आवश्यकता हैं। एक बार यह स्तर तय हो जाता हैं कि इसमें यह स्तर रहेगा फिर आगे के लिए यह कार्यक्रम करना सुनिश्चित हो जाता हैं। स्कीम एनांउस होती हैं, बजट पास होता हैं, पैसा रिलीज़ होता हैं, उसके बाद विज्ञापन होते हैं। देश भर से तमाम लोगों से प्रोजैक्ट्स आते हैं। जब उनसे कहा जाता है कि आपा प्रोजैक्ट बनाइये तो उसके लिए समय देना पड़ता हैं। दो महीने, तीन महीने उनको समय लगता हैं। कोई प्रयोगिक प्रोजैक्ट्स बनाता हैं, कोई थ्योरेटिकल प्रोजैक्ट्स बनाता हैं। विभिन्न विषय हैं, उनको कंपेयर करना पड़ता हैं। ऐसा नहीं हैं कि केवल एक ही सब्जैक्ट हैं। विज्ञान के विभिन्न हैं इसलिए अलग-अलग दृष्टि से उनको स्क्रीन करना पड़ता हैं स्केनिंग करना पड़ता है। इसलिए मैं यह नहीं मानता कि इसमें अनावश्यक विलम्ब हुआ है। लेकिन अगर सम्माननीय सदस्य के पास कोई ऐसी सूचना हैं कि इसमें बहुत जान-बूझ कर विलम्ब हुआ हैं तो वह अवश्य मेरे नोटिस में लाएं।

श्री ब्रतीन सेनगुंप्त .... (पश्चिमी बंगाल) **:** महोदय, जान-बूझ कर विलंब की बात नहीं हैं।

†[ ]Transilteration in Arabic Script

Various Governments appointed screening committees. They invited applications and that was in December, 1997. Six months have elapsed. There has also been a reduction of Rs. 18 crores in the Budget of the Ministry of Science and Technology. The allocations to the Department of Biotechnology and the Council for Scientific and Industrial Research have stagnated. Can the development of science, as the hon. Minister has pointed out,...

MR. CHAIRMAN: This does not arise out of the Minister's clarification...*{Interruptions)* The first part of your point is all right but not the other one.

PAPERS LAID ON THE TABLE

Memorandums of Understanding (1998-99) between Govt of India and Central Warehousing Corporation, and Karnataka Antibiotics and Pharmaceuticals Ltd.

THE MINISTER OF CHEMICALS AND FERTILISERS AND MINISTER OF FOOD AND CONSUMER AFFAIRS (SHRI SURJIT SINGH BARNALA: Sir I lay on the Table a copy each (in English and Hindi) of the following papers:—

(i) Memorandum of Understanding between the Government of India (Ministry of Food and Consumer Affairs, Department of Food and Civil Supplies) and Central Warehousing Corporation, for the year 1998-99. [Placed in Library, *See* No. LT-1047/98]

(ii) Memorandum of Understanding between the Government of India (Ministry of Chemicals and Fertilizers, Department of Chemicals and Petrochemicals) and Karnataka Antibiotics and Pharmaceuticals Limited, for the year 1998-99.

[Placed in Library *See* No. LT-1050/98]